विश्ववादी, समाजवादी, मानवतावादी, समानतावादी और क्रांतिकारी विचारधारा के सृजक श्री गुरु रविदास जी महाराज के 649वें आगमन पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं !

श्री गुरु रविदास जन्म स्थान मंदिर मंडूर साहिब लहरतारा नई बस्ती मंडुवाडीह वाराणसी उत्तर प्रदेश प्रबंधक - संत प्रभु प्रसाद, M.: 98890-12054

संत सुग्रीव राम जी
SE, PWD, (U.P.) Retd.

संत कृष्ण कबीर जी
गद्दी नशीन संत हरी दास आश्रम खैरटी जींद (हरियाणा)

रूप लाल रूप
ज़िला शिक्षा अधिकारी (रिटा.)

क्या आप जानते हैं? कैलिफ़ोर्निया (अमेरिका) से जनरल और आपके समाज की गतिविधियों से संबंधित दो साप्ताहिक समाचार पत्र हैं, जिनमें आप अपने मार्गदर्शकों के लेख तथा समाज से जुड़ी समाचार सामग्री प्रकाशित करवा सकते हैं :
देश दुआबा (पंजाबी), Ambedkar Times (अंग्रेज़ी), Desh Doaba TV
इन समाचार पत्र को आप वेबसाइट www.ambedkartimes.com पर पढ़ सकते हैं।
Email: deshdoaba@yahoo.com Mobile and WhatsApp +1 916 947 8920

सतिगुरु रविदास जी महाराज का अगला 650वां प्रकाश पर्व
20 फरवरी 2027 - शनिवार

विश्व मानवता की अवधारण - बेग़मपुरा

इस ट्रैक्ट को डाक द्वारा निःशुल्क मँगवाने के लिए नीचे दिए गए व्हाट्सऐप नंबरों पर अपना डाक पता भेजें।

ट्रैक्ट नंबर 01

प्रकाशक : **संत शिरोमणि श्री गुरु रविदास सेवा समिति**
श्री गुरु रविदास जन्म स्थान लहरतारा
नई बस्ती मण्डूर नगर,
मण्डुवाडीह वाराणसी (उ.प्र.)

संत जरनैल सिंह जज (रिटा.)
जलबेड़ा अम्बाला (हरियाणा)
मो. 9991118651

ट्रैक्ट नं. 01/ प्रथम वार 3000/ जनवरी 2026 / कीमत : आप पढ़े व ओरों को भी पढ़ाये

गुरु रविदास महाराज जी की जीवन-गाथा पर आधारित सीरियल

श्री गुरु रविदास जी के जीवन एवं विचारधारा पर सीरीयल बनाने हेतु टीम विचार-विमर्श उपरंत यादगारी तस्वीर में

गुरु रविदास महाराज जी की जीवन-गाथा पर आधारित एक ऐतिहासिक सीरियल के निर्माण के उद्देश्य से विजयपाल सिंह (टेक्नीशियन), ग्राम टिकोली, जिला हरिद्वार तथा मुकेश कुमार (डायरेक्टर), मुंबई, संत जरनैल सिंह जी (सेवानिवृत्त अतिरिक्त जिला न्यायाधीश) के गांव जलवेड़ा (अंबाला) पहुंचे। इस अवसर पर राजस्थान से चांद राम, जींद से संत कृष्ण कबीर खरैंटी (हरियाणा), उत्तर प्रदेश के बनारस से विद्वान श्री सुग्रीव राम (एस.ई., सेवानिवृत्त पी.डब्ल्यू.डी.-उत्तर प्रदेश) तथा रूप लाल रूप (स्टेट अवार्डी), जालंधर भी इस विचार-विमर्श में सम्मिलित हुए। इसके अतिरिक्त गुरु रविदास महाराज जी के प्रचारक भी जलवेड़ा से इस बैठक का हिस्सा बने।

सुबह 11:00 बजे से सीरियल निर्माण से जुड़ी टीम ने गुरु रविदास महाराज जी की जीवन-गाथा से संबंधित ऐतिहासिक तथ्यों और संदर्भों पर विस्तृत चर्चा प्रारंभ की, ताकि गुरु जी के जीवन, संघर्ष और संदेश को संपूर्ण विश्व तक प्रभावी रूप से पहुँचाया जा सके। यह विचार-चर्चा निरंतर शाम 5:00 बजे तक चली, जिसमें अनेक महत्वपूर्ण एवं प्रस्तुत करने योग्य तथ्यों पर सहमति बनी।

उल्लेखनीय है कि यह सीरियल आज से लगभग साढ़े छह सौ वर्ष पूर्व शूद्र समाज द्वारा झेले गए सामाजिक, धार्मिक और मानवीय संघर्षों के विभिन्न पहलुओं को यथार्थ रूप में प्रस्तुत करेगा। यह सीरियल दर्शकों के लिए अत्यंत विचारोत्तेजक और देखने योग्य होगा। शीघ्र ही इस परियोजना पर कार्य आरंभ किया जाएगा। दर्शकगण प्रतीक्षा करें।

श्री गुरु रविदास जी के जन्मस्थल मण्डूर नगर का संक्षिप्त इतिहास

संत जरनैल सिंह जज (रिटा.), जलबेड़ा अम्बाला (हरियाणा)
मो. 9991118651

श्री गुरु रविदास जी का जन्म काशी के मण्डूर नगर (मण्डुवाडीह, लहरतारा, वाराणसी) में हुआ, जहाँ शूद्र वर्ग की बड़ी आबादी निवास करती थी। गुरु जी ने स्वयं को शूद्र जाति से संबंधत करते हुए स्पष्ट रूप से कहा कि उनका जन्म मण्डूर में हुआ और उनका नाम रविदास है। 'रैदास रमायण' में भी एक शलोक अंकित है -

काँशी डिंग मण्डूर अस्थाना, शूद्र वर्ण करत गुजराना।।
मण्डूर नगरी लीन अवतारा, रविदास शुभ नाम हमारा।।

गुरु रविदास जी के पिता माननीय श्री रघु जी और माता श्रीमती कर्मा जी थे। वाराणसी पवित्र गंगा नदी के तट पर स्थित एक प्रमुख धार्मिक नगर है। वरुणा और अस्सी नदियों के बीच स्थित होने के कारण इसका नाम वाराणसी पड़ा। गंगा में बाढ़ आने के समय अस्सी नदी के माध्यम से आई गंदगी मण्डूर के निकट एकत्र हो जाती थी, जिसे 'डिंग' कहा जाता था। इसी से बना जलकुंड आज 'लहरतारा तालाब' के नाम से जाना जाता है।

इस क्षेत्र को पहले 'नीच बस्ती' कहा जाता था, जिसे बाद में 'नई बस्ती' नाम दिया गया। यही स्थान श्री गुरु रविदास जी के जन्मस्थल के रूप में ऐतिहासिक एवं धार्मिक दृष्टि से विशेष महत्व रखता है। इसी कारण इस बस्ती का नाम मण्डू ऋषि के नाम पर रखा गया, जो इस बस्ती के वैद्य (डॉक्टर) भी थे, तथा इस बस्ती की रक्षा करने वाले व्यक्ति का नाम 'डीह' था।

इस बस्ती के लोग मृत पशुओं को उठाने, उनकी खाल उतारने, चमड़े को रंगने तथा उससे जूते बनाने का कार्य करते थे, इसलिए अन्य स्थानों से कोई भी व्यक्ति इस बस्ती में नहीं आता था। किंतु जब कभी कोई व्यक्ति किसी कार्यवश इस बस्ती में आता था, तो उसे रास्ता दिखाने के लिए बस्ती के बाहर एक गंदा ढोल रखा जाता था। ढोल बजते ही मण्डूर के निवासी अपनी झोपड़ियों में छिप जाते थे, क्योंकि उन्हें अन्य जातियों के लोगों को देखने अथवा सुनने तक की मनाही थी। जब नगर में किसी का पशु मर जाता था, तो ढोल को बार-बार बजाया जाता था और ढोल से मृत पशु की ओर पानी की एक पतली धार (पगडंडी) बनाई जाती थी, ताकि वहाँ के लोग मृत पशु को उठाते समय ऊपर की ओर न देखें, बल्कि उसी जलधारा की ओर देखते रहें। मृत पशु की पूँछ के साथ एक काँटेदार झाड़ी भी बाँध दी जाती थी, ताकि लौटते समय वह झाड़ी नदी के किनारे रगड़ खाकर उनके पैरों के निशान मिटा दे। समाज की यह स्थिति पूरे देश में लगभग एक जैसी थी, क्योंकि इन लोगों को गाँवों में बसने की अनुमति नहीं थी। उन्हें गाँवों के दूर दक्षिण दिशा में बसाया जाता था, ताकि उनकी बस्ती की हवा तक किसी को स्पर्श न कर सके। इसी कारण श्री गुरु रविदास जी ने अपने शब्दों में कहा है- **मेरी जाति कुट बांढला ढोर ढोवंता, नितहि बानारसी आस पासा॥**

इस निकटता होने के कारण केवल मण्डूर कस्बे के लोग ही नगर से मरे हुए पशुओं को एकत्र करने के अधिकारी थे। इसलिए किसी अन्य स्थान को गुरु जी का जन्मस्थान कैसे कहा जा सकता है?

सतसंगति मिलि रहीऐ माधउ जैसे मधुप मखीरा ॥

एम.एल. गंगोरे
कवि एवं लेखक (2 किताबें संत रविदास जी पर) पूर्व रीज़नल डाइरेक्टर (भारत सरकार)
पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष, राष्ट्रीय रविदास परिषद, मो. 9406900103

आज हम श्री गुरु रविदास जी का 649वाँ प्रकाश दिवस मना रहे हैं। श्री गुरु रविदास जी द्वारा सैकड़ों वर्ष पहले अपनी वाणी में लिखा गया था कि समाज में एकता ऐसी होना चाहिए जैसे शहद की मधुमक्खीयों में होती है। किसी भी संकट के समय, यानि जब उनके द्वारा बड़ी मेहनत से शहद एकत्र करने के लिए बनाए गए छते को किसी के द्वारा नष्ट किया जाने वाला हो, वे सारी कि सारी मधुमक्खीयों अपने दुश्मन पर इकट्ठा होकर टूट पढ़ती है और अपनी रक्षा करने में सक्षम हो जाती है। आज देश में कही न कही हमारे समाज के लोगों को सामाजिक असमानता का, अत्याचार का शिकार होना पड़ रहा है। शिकार होने वाले व्यक्ति को कोई मदद करने नहीं आता, क्या यहाँ हमारी गुरु जी के प्रति श्रद्धा है, मान्यता है ? वैसे हमारा समाज जहां कहीं भी आर्थिक रूप से, सामाजिक रूप से या राजनैतिक रूप से सक्षम है वहाँ इस तरह की घटनाएं अवश्य कम सुनाई देती है। इसका मतलब हम यह नहीं लगा सकते कि हमारा समाज पूर्ण रूप से उन्नत हो गया है या हममें सामाजिक एकता प्रचुर मात्र में समा गई है। संत रविदास जी महाराज ने अपनी वाणी में अनेकों जगह अपनी जाति 'चमार' शब्द का उल्लेख किया। मेरी जाति 'चमार' मैं 'खलास चमारा' आदि। यदि चमार शब्द घृणा का शब्द माना जाता तो फिर संत रविदास जी ने अपने लेखों में, उपदेशों में 'चमार' शब्द का उपयोग क्यों किया ? यह एक विचारणीय प्रश्न बन गया है। यह सत्य है कि तत्कालीन व्यवस्था ने हमारे समाज को लगभग 1100 उपजातियों में बॉट रखा है ताकि हममें सामाजिक एकता न बन पाये। हम रविदास जी के वंशज़ अलग-अलग क्षेत्र में अलग-अलग नामों से जाने जाते हैं। कहीं भी सार्वजनिक स्थान, चाहे वह रेल यात्रा हो या कोई सामाजिक कार्यक्रम हो हम अपने भाइयों की विभिन्न सरनेम के चलते समझ नहीं पाते हैं कि हम गुरु रविदास जी के ही वंशज़ हैं। वैसे देश में जैन समाज कि जनसंख्या हमारे मुकाबले (चमार जगत की संख्या 22 से 24 करोड़ बताई जा रही है) बहुत ही कम है किन्तु वे सिर्फ और सिर्फ पूरे देश में 'कश्मीर से कन्याकुमारी और अरुणाचल से गुजरात तक' जैन नाम से जाने जाते हैं, वे बेहिचक होकर अपने जाति बंधुओं से मिल सकते हैं इससे उनकी सामाजिक एकता स्वत: सिद्ध हो जाती है।

जब रविदास जी ने अपनी वाणी में अपनी चमार जाति का बखान किया तो हम अन्य उपजातियों के चक्कर में अपने को श्रेष्ठ बतलाकर अपनी सामाजिक एक्ता को कहाँ ले जा रहे हैं। संत रविदास की वाणी तब ही सार्थक हो सकेगी जब हम उनकी वाणी के अनुसार अपने को ढ़ाल सके। जब 600 साल पहले सतिगुरु रविदास जी ने अपने को बतलाया तब भी उस समय के राजा महाराजा, झाला रानी, मीरा बाई उनकी शिष्य बनी। विडम्बना यह है कि आज तक हमने संत, संत श्री 108, श्री श्री 1008, महाराज, स्वामी इत्यादि अलंकारों से संतों को निवाज़ा है किन्तु 'चमार संत' नहीं बना पाये है। क्या रविदास जगत के संतों को चमार संत या रविदास संत कहलवाने में शर्म महसूस होती है। ऐसी भ्रम की स्थिति में सामाजिक एकता एक दिवास्वप्न बन कर रह गई है। यदि

हमारे समाज के संत अपने को चमार संत के रूप में स्थापित कर सकें तो सकल समाज भी अपने को चमार कहलाना पसंद करने लगेगा और फिर यह चमार शब्द बहुत ताकतवर और सम्मानित बन सकेगा। हमें भाषा और क्षेत्रवाद की सीमाओं से बाहर आना होगा और विभिन्न उपजातियों के बीच शादी विवाह का दायरा बढ़ाना होगा अन्यथा हम गुरु जी के वंशज़ कहलाने लायक नहीं है। सभी प्रबुद्ध पाठकों से मेरा निवेदन है कि वे मेरे इस प्रस्ताव पर गंभीरता से सोचें और पूरे देश के समाजबंधु एक ही टाइटल 'चमार' लिखने की कोशिश करें जिससे पूरे देश में रविदास समाज की एकता मज़बूत हो सके और गुरु जी के कथन "**सतसंगति मिलि रहीऐ माधउ जैसे मधुप मखीरा**" को न्याय संगत बनाया जा सके।

जय गुरुदेव

बौद्धिक शैक्षिक समिति

103, सैक्टर 5, पार्क सिटि, कटारा हिल्स, भोपाल, मध्य प्रदेश

बौद्धिक शैक्षिक समिति (Intellectual Educational Society) की ओर से समस्त समाज बंधुओं को मंगलकामनाएं।

बंधुओं, जैसा आप सभी जानते हैं कि आए दिन शिक्षा का निजीकरण होता जा रहा है। इससे शिक्षा महंगी होती जा रही है जिसके परिणामस्वरूप बहुजन समाज के गरीब बच्चे शिक्षा से वंचित होते जा रहे हैं। ऐसे समय में 'बौद्धिक शैक्षिक समिति' बहुजन समाज के बच्चों के लिए एक उच्च गुणवत्ता वाली स्कूल स्थापित करने जा रही है, जिसमें 'नो प्रॉफ़िट नो लास' के आधार पर विद्यार्थियों को उनकी रुचि के अनुसार शिक्षा दी जाएगी, उनके व स्कूल कर्मचारियों के लिए आवास का केम्पस रहेगा। विद्यार्थियों को अपनी शिक्षा के दौरान किसी भी प्रकार की बाहरी कोचिंग न लेनी पड़े, इसकी समुचित व्यवस्था होगी। इस महत्वपूर्ण योजना को मूर्त रूप देने में 'बौद्धिक शैक्षिक समिति' समाज के बुद्धिजीवी, नौकरीपेशा, व्यवसायी वर्ग व समाज सेवकों को सादर आमंत्रित करते हुए अपनी स्वेछानुसार सहयोग की अपील करती है। अपना आर्थिक सहयोग कृपया सीधे समिति के खाता न. केनरा बैंक 110090792846 IFSC CNRB0004317 पर कर सकते हैं।

अध्यक्ष
एम.एल. गंगोरे
मो. 9406900103

विश्व मानवता की अवधारणा - बेग़मपुरा

एडवोकेट प्रो. लाल सिंह, लुधियाना, मोबाइल : 94175-57751

राग गौउड़ी रविदास जी के पदे
गौउड़ी गुआरेरी

१ॐ सतिनाम करता पुरख गुर प्रसादि।।

बेगमपुरा सहर को नाउ ॥ दूखु अंदोहु नही तिहि ठाउ ॥
नां तसवीस खिराजु न मालु ॥ खउफु न खता न तरसु जवालु ॥१ ॥
अब मोहि खूब वतन गह पाई ॥ ऊहां खैरि सदा मेरे भाई ॥१ ॥ रहाउ ॥
काइमु दाइमु सदा पातिसाही ॥ दोम न सेम एक सो आही ॥
आबादानु सदा मसहूर ॥ ऊहां गनी बसहि मामूर ॥२ ॥
तिउ तिउ सैल करहि जिउ भावै ॥ महरम महल न को अटकावै ॥
कहि रविदास खलास चमारा ॥ जो हम सहरी सु मीतु हमारा ॥३ ॥२ ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब पृष्ठ 345)

गुरु रविदास जी ने इस शब्द के बीच अटल सच्चाईयां निरूपित की हैं। इनका आधार वैज्ञानिक सत्य है। यही अटल सिद्धांत है। इस शब्द के विचारों में इतनी सरलता, इतनी स्पष्टता, इतनी गहराई, इतनी गंभीरता, इतनी विशालता और परिपक्वता निरूपित है कि इस शब्द के सृजन के बीच प्रयोग हर वाक्य (तुक) यहां तक कि हर शब्द सैद्धान्तिक गुणों का धारणी बन गया है। इसलिए शब्द की हर प्रस्तावना अपने-आप के बीच एक सिद्धांत समाकर बैठा है। इसकी पुष्टि भारत के प्रसिद्ध संगीत शास्त्रियों की राग निर्णायक कमेटी ने की है। ''गौउड़ी गंभीर प्रकृति का राग है। विलखती आत्मा कृपा की याचना करती है और अपने-आप की खोज करती है। इसलिए इस राग में गुरु जी ने मन, मति, बुद्धि, आत्मा, मौत और मुक्ति आदि गंभीर विषयों में गुरबाणी उच्चारण की हुई है।''

गुरु रविदास जी महान चिंतक हैं। उनकी दूरदृष्टि, गहरी सोच, विशाल दृष्टिकोण, विश्वव्यापी ज्ञान और चमत्कारी क्रांतिकारी वैज्ञानिक पहुंच ने 'शब्द बेगमपुरा सहर को नाउ' के बीच विश्वव्यापी विचारधारा का सृजन किया है, जो आज के विश्व के महान चिंतकों की विचारधारा की अपेक्षा कहीं अधिक वैज्ञानिक तर्कयुक्त और अमल के बीच पूरी उतरने वाली है। इस की परिपक्वता करते हुए डॉ. जीत सिंह शीतल जी लिखते हैं - ''इस संदर्भ या प्रसंग में जब हम भक्त (गुरु) रविदास के ऊपरी शब्द (बेगमपुरा सहर को नाउ) को देखते हैं, तो बड़े-बड़े समाज वैज्ञानिक, बुद्धिजीवी और राजसी शास्त्री चकित रह जाते हैं। मार्क्स लेनिन आदि भी शायद ऐसे सम-देश सम-राज, सम-शहरी, सम-अधिकारी और मानव वतनगाह का संकल्प न कर सके।''

इस लेख में एक अन्य स्थान पर डॉ. शीतल जी अटल सच्चाई का भेद खोलते हुए लिखते हैं -

''किसी महान पुरुष ने देश की सीमाओं से उसके हितों से ऊपर उठकर सारे विश्व के ऊपर नज़र नहीं दीं। यही कारण है कि आज तक अंतर देशों के झगड़े खत्म नहीं हुए।''

डॉ. जीत सिंह शीतल के इन कथनों से अटल सच्चाई से तो पर्दा उठाया ही गया है। उन्होंने गुरु रविदास जी को एक महानतम चिंतक के तौर पर भी तर्क के साथ दलीलें देकर सिद्ध किया है। इस संबंध में डॉ. शीतल स्वयं ही लिखते हैं कि-

''किसी भगत (गुरु) ने ऐसे राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक या भौगोलिक अंतर्राष्ट्रीय देश की स्थापना की बात नहीं की है। आज से 600 साल पूर्व ऐसे वतन या सर्वमानवीय देश के बारे में सोचना और घोषणा करना, उसकी रूपरेखा तैयार करना गुरु रविदास जी जैसे विश्व-मानव, देवता समान पुरुष और गुरु रूप भगत के हिस्से ही आ सका है। हमारा सिर अपने आप ही उनकी महान प्रतिभा के आगे झुक जाता है।''

डॉ. सुरेंद्र कुमार देवेश्वर गुरु रविदास जी की 'बेगमपुरा' की विचारधारा का ज़िक्र करते हुए, उन को रूसो और वाल्टेयर का पूर्वज बताते हैं, वो लिखते हैं - ''रूसो के स्वतंत्रता, बराबरी और भाईचारे के जिन संयुक्त विचारों के बारे में यह समझा जाता है कि, इस संसार के बीच एक नई विचारक क्रांति के जन्मदाता हैं। वास्तव में यह विचार तो यह भारतीय संत परंपरा के बीच चौदहवीं पन्द्रहवीं सदी के बीच प्रचार किए गए। संत रविदास की वाणी और प्रचार के ये समस्त विचार थे। यूं गुरु रविदास जी वैचारिक क्रांति के बीच रूसो, वाल्टेयर के भी पूर्वज माने जाते हैं।''

इस कथन से स्पष्ट है कि गुरु रविदास जी विश्व के सबसे पहले क्रांतिकारी विचारधारक और प्रचारक थे। डाक्टर देवेश्वर बेगमपुरा की विचारधारा का अध्ययन करने के उपरांत नीचे लिखे निष्कर्ष पर पहुंचते हैं - ''इस शब्द की अंतरात्मा राजश्री तौर से लोकतंत्र, आर्थिक तौर से समाजवादी राज और आत्मिक तौर से कलात्मक जगत, जिस में सत्यम, शिवम, सुंदरम का पहरा है। हर व्यक्ति के सर्वपक्षीय विकास के लिए यहां पूर्ण अवसर प्राप्त हैं।''

उपरोक्त चर्चा से स्पष्ट हो गया है, कि गुरु रविदास जी विश्व के सबसे पहले क्रांतिकारी राजनीतिक और आर्थिक विकास के लिए समाजवादी लोकतंत्र के चिंतक, सामाजिक तौर से विश्व भाईचारे के सृजक और उच्च स्तर के अध्यात्मवादी हैं। इसलिए वह दुनिया के पहले महानतम चिंतक हैं - इतनी महानता के शिखर पर पहुंच कर भी गुरु ग्रंथ साहब को मानने वाले और विचार करने वाले सिख जगत के विद्वानों को गुरु रविदास जी की विचारधारा को दुनिया में उजागर कर के प्रचार करने का विचार तक भी क्यों नहीं आया ? इसका क्या कारण है ? इसका उत्तर सरदार करतार सिंह वैद्य बड़े निर्भीक होकर देते हुए स्पष्ट करते हैं, कि गुरु रविदास जी अछूत होने के कारण गुरमति के क्षेत्र में पछाड़े गए हैं। वे लिखते हैं - गुरु रविदास जहां उच्च कोटि के अध्यात्मवादी थे, वहां वह समाजवादी विचारधारा के नेता भी थे। कल्याणकारी राज (Welfare State) के समर्थक और इंकलाब के पुजारी थे। गुरु रविदास जी का जलाल इस कारण अधिक लोकप्रिय नहीं बन सका, जितना कि गुरमति बन सका है, क्योंकि इन की नाम लेवा सेवक आर्थिक, सामाजिक, ऐतिहासिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक तौर से प्रवीण नहीं थी। जागरूक नहीं थी। पिछड़ी जातियों के गुरु पीर भी पछाड़े जाते रहे हैं, जबकि वह भी उसी स्तर तकमील की बात कहते थे, जिसकी दूसरे कहते थे।

सरदार वैद्य ने गुरु रविदास जी की विचारधारा विशेषकर बेगमपुरा की अद्वितीय चमत्कारी

विचारधारा का लोकप्रिय न होने के कारण बड़े स्पष्ट और निर्भय होकर बयान किए हैं -

1. पहला कारण गुरु रविदास जी के नाम लेवा लोग हर पक्ष से ही जागरूक नहीं थे, जब कि गुरमति के बीच ऊंची जातियों से संबंधित गुरुओं के नाम लेवा लोग हर पक्ष से जागरूक थे।

2. सामाजिक और सांस्कृतिक तौर से पिछड़े अछूतों के गुरुओं को पछाड़ा जाता है और उच्च जाति के गुरुओं को उभारा जाता है।

3. वैद्य साहिब के उपरोक्त पैरे के बीच से यह भी विचार बनता है, कि गुरु ग्रंथ साहिब में जात पात और छुआछूत के खंडन के बावजूद भी गुरु घर के ऊंची जाति के नाम लेवा हिंदुओं की तरह ही छुआछूत का पालन करते हैं। परिणाम स्वरूप वह गुरु रविदास जी को गुरु ही नहीं मानते हैं, हालांकि उनकी वाणी के बीच में से लिए वाक्यों को भी 'गुरु वाक' ही स्वीकृत किया जाता है।

अत: उपरोक्त चर्चा से स्पष्ट हो गया है कि गुरु रविदास जी के शब्द बेगमपुरा की विचारधारा दुनिया की विचारधाराओं की अपेक्षा हर तरफ से उत्तम है। इस प्रकार की विचारधारा सुक्रात, प्लैटो, थामसमूर, रूसो, वाल्टेयर, मार्क्स, एंजेल्स, लेनिन आदि ने भी दी है।

यह लेख एडवोकेट प्रोफेसर लाल सिंह जी द्वारा लिखित पुस्तक

'सटीक बाणी श्री गुरु रविदास जी और तत्व सिद्धांत' से लिया गया एक अंश है।

पूरी पुस्तक पढ़ने के लिए Visit करें : www.begumpuramission.com

महान इन्कलाबी और मानवतावादी : गुरु रविदास जी

डॉ. जी.सी. कौल, एम.ए., पी.एच.डी., मो. +919463223223

1. मध्यकालीन युग में दलित क्रांति के अग्रदूत, स्त्री वर्ग को समान अधिकारों की राह दिखाने वाले तथा बनारस के प्रमुख पंडितों से 'दंडवत् वंदना' करवाने वाले संत सतिगुरु रविदास जी ऐसे मानवतावादी जननायक थे, जिन्होंने न केवल अछूतों के लिए, बल्कि विद्वान पंडितों और राजा-रानियों के लिए भी एक महान दार्शनिक के रूप में तत्कालीन समाज में अपनी पहचान बनाई। उस समय दलदल बन चुकी भारत-भूमि के हृदय पर वे कमल के फूल की भाँति खिल उठे और जाति-पाँति, छूत-अछूत, ऊँच-नीच, आपसी वैर-विरोध, धार्मिक घृणाओं तथा धर्म के तथाकथित ठेकेदारों द्वारा फैलाए गए अंधविश्वास और कर्मकांड से प्रदूषित हो चुके परिवेश को अपने दर्शन के प्रकाश और कीर्ति की सुगंध के माध्यम से आलोकित, उज्ज्वल और सुवासित किया।

2. गुरु रविदास जी का तेजस्वी व्यक्तित्व सदियों से पीड़ित, प्राणशक्ति से वंचित हो चुके जन-साधारण के लिए आशा का एक नया संदेश लेकर आया। यह ऐसा संदेश था, जिसने भविष्य में रूढ़िवादी समाज द्वारा जकड़ी गई जंज़ीरों को तोड़कर समता, स्वतंत्रता और भ्रातृत्व पर आधारित एक नए समाज की रचना का मार्ग प्रशस्त किया। भगवान बुद्ध के सदियों बाद भारत के पीड़ित, दबे-कुचले, पद-दलित और उपेक्षित लोगों को गुरु रविदास जी के रूप में अपना ऐसा मार्गदर्शक मिला, जो उनके दु:खों, दर्दों और पीड़ाओं की वास्तविकता को न केवल गहराई से समझता था, बल्कि उसने स्वयं अपने जीवन में इन पीड़ाओं को सहन भी किया।

3. अछूत वर्ग में जन्म लेकर उच्च वर्गों के लिए भी प्रकाश-स्तंभ बनने वाले इस महान

क्रांतिकारी मार्गदर्शक ने अपनी वाणी के माध्यम से इस धरती पर समाजवादी लोकतंत्र की संकल्पना प्रस्तुत की और गरीबों, मजदूरों तथा किसानों की लूटी जा रही मेहनत के विरुद्ध जन-चेतना जागृत की। आपने अपने अनुभव, आध्यात्मिक ज्ञान और कल्याणकारी जीवन के द्वारा अंधविश्वासों, वहम-भ्रमों, जंतर-मंतर, तीर्थ, व्रत, योग-विधियों, मूर्ति-पूजा, जनेऊ, दीप, अर्चना तथा ऊँच-नीच और जाति-पाँति के कीचड़ में फँसी हुई भारतीय जनता को जीवन जीने की क्रांतिकारी दिशा प्रदान की। पाखंडी पुरोहितों और कट्टर रूढ़िवादियों को सत्य के मार्ग पर ले जाने का आपका तरीका अत्यंत तर्कसंगत और अनोखा था।

पुरोहितवादी पाखंड को ललकारने और अछूतों के समान अधिकारों को प्रतिपादित करने के लिए आपने बचपन में ही वे कार्य करने आरंभ कर दिए, जिन्हें श्रुतियों, स्मृतियों और तथाकथित धार्मिक ग्रंथों के अनुसार केवल तथाकथित उच्च जातियों के लोग ही कर सकते थे। आपने बुलंद स्वर में कहा-

'आपन बापै नाही किसी को, भावन को हरि राजा।।'

(आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 658)

अर्थात् परमात्मा किसी के पिता की जागीर नहीं है; जो भी प्राणी प्रेम-भाव से युक्त है, वह उसकी पूजा-भक्ति कर सकता है। आपने डंके की चोट पर कहा कि कर्मकांड में फँसे, अहंकार-ग्रस्त पाखंडी पुरोहित पागलों अर्थात् बावलों की तरह भटकते हुए स्वयं को बड़े कवि, कुलीन, पंडित अथवा विद्वान, योगी, संन्यासी, ऋषि, मुनि, बहादुर, शूरवीर और दानी-दाते समझे बैठे हैं-

हम बड कबि कुलीन हम पंडित हम जोगी संनिआसी ॥
गिआनी गुनी सूर हम दाते इह बुधि कबहि न नासी ॥२॥
कहु रविदास सभै नही समझसि भूल परे जैसे बउरे ॥....

(आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 973)

4. क्रांतिकारी मार्गदर्शक द्वारा पंडितों और पुरोहितों जैसे कर्मकांडों का निर्वाह करना तथा उन सा पाखंडी वेश धारण करना, वास्तव में उन लोगों पर करारा प्रहार था जिन्होंने धर्म को एक 'वंशानुगत पेशा' बना दिया था। यह एक खुली चुनौती थी, एक ललकार थी और भारत के आकाश में तथाकथित धर्म के नाम पर लहराए जा रहे झूठे झंडे को चीर-फाड़ कर गिराने हेतु विद्रोहात्मक ढंग से उठाया गया एक ऐतिहासिक कदम था। धर्म में प्रचलित आरती को आपने **'झूठे सगल पासारे'** कहकर केवल एक दिखावा घोषित किया। मूर्ति-पूजकों द्वारा तथाकथित देव-पूजा के समय शुद्ध जल, फल और दूध आदि को नदियों, नालों और पहाड़ों से एकत्र कर तराशे गए पत्थरों को स्नान कराना तथा ठाकुरों को भोग अर्पित करने की परंपरा को आपने रूढ़िवादी आडंबर और कर्मकांडीय पाखंड बताया। आपने दृढ़ता से कहा कि पत्थर के निर्जीव खंडों को भोग लगाने के लिए चढ़ाया गया दूध, फूल और जल तो पहले ही क्रमश: बछड़े, भौंरे और मछली द्वारा जूठा किया जा चुका है, फिर ऐसी जूठी सामग्री से की गई पूजा पवित्र कैसे हो सकती है?

5. गुरु रविदास जी ने सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक और आर्थिक पराधीनता के विरुद्ध संघर्ष का ध्वज बुलंद किया। आपने तथाकथित निम्न वर्ग में आत्म-विश्वास, आत्म-शक्ति और

आत्म-सम्मान जाग्रत कर उन्हें जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में कथित कुलीन वर्ग के समकक्ष खड़ा किया आपने 'पराधीनता पाप है' का उद्घोष करते हुए दासता के विरुद्ध संघर्ष की प्रेरणा दी और मानवीय समाज की रचना का विचार प्रस्तुत किया।

6. आपकी कथनी और करनी में कोई अंतर नहीं था। आर्थिक समृद्धि के लिए निरंतर सुकृत से जुड़े रहना, अविद्या तथा अज्ञानता से मुक्ति हेतु विवेक रूपी दीपक की मलिनता को विद्या के प्रकाश से प्रज्वलित करना, नशों के सेवन से परहेज करना, सादा जीवन-व्यवहार अपनाना तथा दूसरों के प्रति सहानुभूति-अर्थात् पराए दु:ख को बाँटने की भावना-मानवीय अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने की क्षमता रखती है। जन-कल्याण की भावना से ओत-प्रोत, वेदना से परिपूर्ण हृदय परायों के प्रति भी अकथनीय, असहनीय और अथाह पीड़ा का अनुभव करता है। संवेदनशील और करुणामय हृदय में ही पराई पीड़ा का सच्चा बोध संभव होता है। गुरुजी का कथन है-

सो कत जानै पीर पराई ॥
जा कै अंतरि दरदु न पाई ।।१ ।। **(आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 793)**

7. **'बेगमपुरा सहर कौ नाउं'** शब्द में गुरु रविदास जी ने रहस्यमय पारलौकिकता को जन-कल्याण के हित में लौकिकता में परिवर्तित करने का ऐतिहासिक कार्य किया है। उनका यह शब्द अर्थ-व्यवस्था का एक विचारणीय मॉडल है। किंतु भौतिकवादी रुचियों तथा आधुनिक युग की वैज्ञानिक उपलब्धियों के प्रभाव में हम अपने महान संत-सतगुरुओं की विचारधारा से व्यवहारिक रूप में बहुत तेज़ी से दूर होते जा रहे हैं। यदि हम आत्म-निरीक्षण करें और अपने परिवेश पर दृष्टि डालें, तो आज की और मध्यकालीन परिस्थितियों में अधिक परिवर्तन दृष्टिगोचर नहीं होता। आज का तथाकथित स्वतंत्र और स्वाधीन मनुष्य अभी भी सामाजिक रूढ़ियों, धार्मिक जकड़नों, प्रतिबंधों और राज्य सत्ता का बंदी, गुलाम और पराधीन बना हुआ है। आज भी जातियों, रंगों, नस्लों, समुदायों और व्यवसायों के भेदभाव किसी न किसी परिवर्तित रूप में विद्यमान हैं।

8. आज रूढ़िवाद हर मनुष्य, जाति, कौम, मज़हब और नस्ल में समा गया है। नशाखोरी, सत्कर्मों से विमुखता और अरुचि, दुर्व्यवहार, बेईमानी, अनियमितता, निर्लज्जता, निर्दयता, क्रूरता, अविश्वास, असंवेदनशीलता, लापरवाही, बेवफाई और बेलिहाज़ी-ये सभी आज के मनुष्य की विशेषताएँ बन गई हैं। श्री गुरु रविदास जी ने ऐसे लोगों को अपनी वाणी में **'माटी को पुतरा कैसे नचत है'** और श्री गुरु नानक देव जी ने- **'राजे सीह मुकदम कुत्ते ॥ जाइ जगाइन्हि बैठे सुते ॥'** कहकर संबोधित किया है।

संत-सतिगुरुओं की वाणी और विचारधारा को केवल पढ़ने-पढ़ाने तक सीमित कर देना तथा अपने-अपने धर्म को श्रेष्ठ सिद्ध करने की होड़ में जकड़ा हुआ आज का मानव, तभी अपने आचरण और व्यवहार में महापुरुषों की सदा नवीन और विनम्र विचारधारा को व्यावहारिक रूप से अपनाकर विश्व-शांति और समानता-आधारित विश्व-भाईचारे की स्थापना करने में समर्थ हो सकता है। यही सामर्थ्य वर्तमान युग की स्थायी और प्रमुख आवश्यकता है। इस संदर्भ में गुरु रविदास जी की प्रभावशाली, मानवतावादी वाणी और व्यक्तित्व सदियों तक भटके हुए जीवों को मार्गदर्शन देती रहेगी।

श्री गुरु रविदास जी की भारत यात्राएँ

रूप लाल रूप, ज़िला शिक्षा अफ़सर (रिटा.), मो. +94652-29722, 94652-25722

1. गुरु रविदास आश्रम सिरसई (गुजरात)

गुरु रविदास महाराज जी लोक कल्याण हेतु अपनी पहली यात्रा के समय सिरसई (गुजरात) में 1436 ई. में पधारे। 'संत रोहीदास आश्रम' के नाम से जाने जाते इस पावन स्थल पर प्रबंधकों द्वारा गुरु साहिब की आमद ग्रेनाईट के पत्थर पर उकेरी हुई है। यह अस्थान जूनागढ़ से 40 किलोमीटर की दूरी पर सुशोभित है। गुरु साहिब ने लोगों की सुविधा हेतु यहां शाल कुण्ड, हिमाल कुण्ड, चर्म कुण्ड, हाड़गड़ो कुण्ड, स्नानाघाट कुण्ड, अमर कुण्ड तथा शिवघाट कुण्ड प्रकट किये। इनमें से पहले तीन बरकरार हैं और बाकी के कुण्ड आलोप हो चुके हैं। स्थानीय दंत-कथा के अनुसार यहां का राजा कंकण परिवार सहित गुरु जी का चरण सेवक बन गया था। यह स्थान गुरु जी की गतिविधियों का 12 साल तक केन्द्र रहा। यहां से उन्होंने गुजरात के प्रमुख शहरों की यात्रा करके द्वारका के मार्ग से चंदका, कंधकोट, मुल्तान, जलालाबाद, अबादन, बगदाद आदि तक लोगों को एक ईश्वरवाद का संदेश दिया। वह जगह-जगह श्रम और कर्म के रूप में सचियार होने का संदेश देते हुए वापिस सिरसई आश्रम आ गये।

2. छत्र मेले में गुरु रविदास जी का ऐतिहासिक उपदेश

गुरु रविदास जी पूर्व देश की यात्रा के समय 1460 ई. में गंगा और गंडक नदी के संगम पर लगते 'छत्र मेला', जो एक महीना चलता है, में उपदेश करने सोनपुर (बिहार) पहुंचे। इस मेले में हाथी, घोड़ों के अलावा सुंदर महिलाओं की खरीदो-फरोख्त भी होती थी। इतिहास में दर्ज है कि 'छत्र मेला' में चंद्रगुप्त मौर्य, अकबर, औरंगज़ेब आदि जैसे बादशाह हाथी, घोड़े खरीदते रहे हैं। गुरु रविदास जी ने यहां एक महीना रह कर पारब्रह्म का यश-गायन किया और दूर-दूर से आती संगतों को औरत जाति के सम्मान का ऐतिहासिक उपदेश दिया। उनकी इस फेरी के उपरांत व्यापारियों ने औरतों की खरीदो-फरोख्त से मुंह मोड़ लिया था। यह मेला आज भी धूम-धाम से मनाया जाता है, लेकिन गुरु साहिब द्वारा औरतों के सम्मान हेतु डाले पद चिन्हों का आज भी सत्कार होता है।

3. गुरु रविदास जी का आरती उच्चारण स्थान जगन्नाथ पुरी

उड़ीसा प्रांत में समुद्र के किनारे, दिल्ली से 1818 कि.मी. दूर पुरी शहर स्थित है। हिंदुओं के चार पावन धामों में से 'जगन्नाथ धाम' वहीं सुशोभित है। गुरु रविदास जी 1462 ई. में पुरी गये। यहां जगन्नाथ धाम में शूद्रों का प्रवेश वर्जित था। इस लिए गुरु साहिब को मंदिर के दर्शन करने की आज्ञा नहीं मिली। उन्हें मंदिर से 500 मीटर की दूरी पर बैठने को कहा गया। गुरु साहिब ने मौजूदा बड़ी मोचीशाही शूद्र बस्ती के पास समुंदर के रेतीले तट पर अपनी भजन मंडली सहित आसन लगा लिया। उन्होंने वजद (मस्ती) में आ कर **'नाम तेरो आरती मजनु मुरारे'** आरती का गायन किया तो मानो समय वहीं पर थम गया। समुद्र किनारे टहलते हज़ारों लोक चांद चकोर की तरह उनके इर्द-गिर्द इकट्ठे हो गये। यहां के भीलों की उन्होंने वेदना सुनी और उनको निर्भय होकर पारब्रह्म की

बंदगी करने का उपदेश दिया।

4. गुरु रविदास कुटिया मांडो (मध्य प्रदेश)

गुरु रविदास महाराज जी जगह-जगह संगतों को उपदेश देते, सुल्तान ग्यास शाह की हुकूमत के समय, 1476 ई. में मांडो पहुंच गये जो उस समय उच्च कोटि के उलमा और सूफी संतों के पक्के आवास के कारण नैतिक मूल्यों का केंद्र बना हुआ था। सूफी संतों के साथ गोष्टि के उपरांत गुरु साहिब ने मांडो से चार कि.मी. दूर मेंदी खेड़ी गांव के पास काकड़ा खो (खड्ड) के किनारे एक सुन्दर एकांत जगह पर अपनी भजन मंडली सहित डेरा लगा लिया। इस स्थान पर उन्होंने लोगों की सुविधा हेतु पानी का चश्मा प्रकट किया जो निरंतर बह रहा है। लोग सम्मान सहित आज भी चश्मे का जल पी कर गुरु साहिब की जै-जैकार करते हैं। इसी स्थान पर उनकी अनिंद्या श्रद्धालु कुमारी गंगा ने अपनी इज्जत की रक्षा हेतु काकड़ा खो में छलांग लगा कर जान दे दी थी, जिस से सुल्तान ग्यास शाह जबरन शादी करना चाहता था और शाही बारात कुमारी गंगा को बचाती काकड़ा खो में बह गई थी। सुल्तान अपने कुकर्मों का पछतावा करते हुए गुरु रविदास जी का चरण सेवक बन गया था।

5. उज्जैन में गुरु रविदास गद्दी

उज्जैन हिंदुओं का प्रमुख तीर्थ स्थान दिल्ली से 780 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। प्राचीन काल में भारतीय समय की गणना का यह केन्द्र बिन्दु रहा है। हिंदुओं के बारह ज्योर्तिलिंगों में से एक महाकालेश्वर मंदिर यहां शोभायमान है। माना जाता है कि इस मंदिर के दर्शन करने से मुक्ति प्राप्त हो जाती है। इसी कारण यहां पुजारियों के कर्मकांडों का बोलबाला था। गुरु रविदास जी जन-साधारण को कर्मकांडों के प्रति जागरूक करने और सतनाम का संदेश देने हेतु दक्षिण देश की यात्रा से वापसी के समय 1476ई. को यहां पधारे। सिप्रा नदी के किनारे जिस स्थान पर उन्होंने स्नान किया वह रविदास घाट के नाम से जाना जाता है। उनके आने को मूर्तिमान करता यहां छोटा-सा मंदिर बना हुआ है। मंदिर का पुजारी पंडित है, जो गुरु साहिब की बाणी की जगह संस्कृत के श्लोकों का उच्चारण करके मूल निवासी लोगों से पूजा अर्चना करवाता है। रविदास घाट से गुरु साहिब थोड़ी दूरी पर मौजूदा भेरू नाला के पास संत गोवर्धन दास, मूल निवासी आध्यात्मिक मुखिया के आश्रम गये। यहां साधारण मंदिर में गुरु रविदास जी और संत गोवर्धन दास जी की दो गद्दियां सुशोभित हैं। गुरु साहिब की गद्दी सम्मान स्वरूप ऊंची रखी गई है।

6. ऐलौरा में गुरु रविदास तालाब

चोटी के कई विद्वानों द्वारा हैदराबाद में ऐलोरा के स्थान पर बताया जाता तालाब असल में औरंगाबाद से 32 कि.मी. दूर एलौरा की गुफाओं के पास स्थित है, जो प्राचीन हैदराबाद रियासत का हिस्सा रहा है। स्थानीय रविदासिया लोगों की दंत-कथा के अनुसार इस इलाके के राजा येलदेओ के बदन में कीड़े पड़े हुए थे। गुरु साहिब ने उसकी पीड़ा सुन कर अपने आसन के नज़दीक गड्ढा खोद कर नज़दीक बहती येलगंगा का पानी मंगवा कर इस में डाल दिया। बादशाह उस में डुबकी लगा कर चमड़ी रोग से स्वस्थ हो गया। उस ने प्रसन्न हो कर उस गड्ढे को तालाब का रूप दे दिया। पर अब सब कुछ हिन्दूमय हो चुका है। तालाब के साथ हिंदूवादी कथाएं जोड़ दी गई हैं।

इंदौर की रानी अहिल्याबाई होलकर ने 18वीं शताब्दी में इस तालाब का नव-निर्माण करवाया और इस का नाम 'पुण्यश्लोक अहिल्याबाई तीर्थ कुण्ड' रख दिया। इस की 41 सीढ़ियां हैं। सीढ़ीयों पर छोटे-छोटे मंदिर बने हुए हैं। एक मंदिर कुण्ड के मध्य में है। पुजारियों द्वारा कर्मकांडों सहित यात्रियों को स्नान करवाया जाता है। इतना कुछ होते हुए भी लोक स्मृतियों में यह रविदास कुण्ड के रूप में वसा हुआ है।

7. गुरु रविदास जी की चूहड़काणा फेरी

अपनी पहली पंजाब यात्रा के समय गुरु रविदास महाराज जी गांव डंडा (अमृतसर) से होते हुए 1482 ई. में चूहड़काणा मंडी के पास सांदल बार के जंगल में, संत मंडलियों के लिए बनी आलौकिक ठहराव में पहुंच गये। इस संत-मंडली के प्रमुख संतों में सतगुरु कबीर जी, सतगुरु पीपा जी और संत साईं दास जी शामिल थे। इस स्थान पर संत-मंडलियों का आना-जाना बना रहता था। स्थानीय लोग संतों की श्रद्धा पूर्वक सेवा करते और उनके प्रवचन सुनने का लाभ लेते थे। इसी स्थान पर गुरु नानक देव जी ने संत मंडली की इलाही ज्योति को पहचाना और उन पैसों का उन्हें भोजन करवा दिया जो पिता कालू राम जी ने उनको 'खरा सौदा' करने हेतु दिये थे। यह घटना सिख इतिहास में 'सच्चा सौदा' के नाम से प्रसिद्ध है। सिख विद्वान संत मंडली के मुखिया का नाम संत रेण लिखते हैं। इतिहास के पन्ने तलाशें तो गुरु नानक देव जी के समकाली किसी संत रेण का ज़िक्र नहीं मिलता। जिस संत रेण का ज़िक्र इतिहास में दर्ज है उसका देहांत 1930 ई. में हुआ। इस लिए हमारी खोज अनुसार उस संत-मंडली के मुखिया गुरु रविदास जी थे।

8. गुरु रविदास मंदिर तुगलकाबाद

बादशाह सिकंदर लोधी चर्मरोग से पीड़ित था। शाही हकीमों का उपचार नाकाम रहने पर उसने दवा की बजाए दुआ का सहारा लेने की इच्छा व्यक्त की। उसके सलाहकारों ने मश्वरा दिया कि गुरु रविदास जी ने बारूल के राजा येलदेओ को चर्म रोग से तंदरुस्त किया सुना है। बादशाह के फरमान अनुसार गुरु साहिब को अगस्त, 1493 ई. में बड़े सत्कार से बनारस से दिल्ली लाया गया। बादशाह की प्रार्थना सुन कर उन्होंने उसको तंदुरुस्त होने का आशीर्वाद दिया और तुगलकाबाद के जौहड़ (तालाब) के पास समाधि में लीन हो गये। समाधि से जागृत अवस्था में आने पर बादशाह को जौहड़ में स्नान करने हेतु संदेश भेजा गया। तालाब, जो बाद में 'चमारवाड़ा जौहड़' नाम से प्रसिद्ध हुआ, में स्नान के उपरांत वह कुछ दिनों में स्वस्थ हो गया। उसने खुश हो कर गुरु साहिब को 700 बीघा की जागीर अलाट की। इस स्थान पर निर्मित मंदिर में गुरु रविदास जी के चरण सेवक सदियों से पूजा-अर्चना करते आ रहे थे। पर 10.08.2019 को सुप्रीम कोर्ट के आदेशानुसार डी.डी.ए. द्वारा 700 वीघा ज़मीन सरकारी बता कर मंदिर को गिरा दिया गया। समाज के तीव्र विरोध के सम्मुख सुप्रीम कोर्ट ने 400 वर्ग मीटर जगह मंदिर हेतु देने का फैसला 20.10.2019 को सुना दिया। पर मंदिर का निर्माण अभी कई विभागीय अड़चनों के कारण नहीं हो सका।

गुरु रविदास जी का 650वां प्रकाश पर्व 1 फरवरी 2026 से 20 फरवरी 2027 तक श्रद्धापूर्वक मनाया जा रहा है। आइए इस पावन अवसर पर गुरु जी की वाणी और विचारधारा को अपने जीवन में अपनाएं और औरों को प्रेरित करें।

गुरु रविदास महाराज जी का पंजाब में प्रथम पदार्पण

रूप लाल रूप, ग्राम भेलां, डाकखाना नाजका, ज़िला जालंधर (पंजाब), मो. 94652-25722

गुरु रविदास महाराज जी का हदियाबाद में पड़ाव - 1

सन् 1481 में कार्तिक मास के दौरान पाँच नदियों की धरती पंजाब पर गुरु रविदास महाराज जी ने अपना प्रथम चरण रखा। गुरु रविदास महाराज जी के अलौकिक प्रकाश तथा प्रवचनों को सुनकर समस्त जनमानस ऊर्जावान हो उठा।

लुधियाना से फिल्लौर होते हुए गुरु रविदास महाराज जी हदियाबाद पहुँचे। उस समय हदियाबाद एक प्राचीन नगर था, जो लुधियाना-जालंधर मार्ग पर स्थित था। फगवाड़ा तब तक 'फग्गू का वाड़ा' ही कहलाता था। गुरु जी की संत मंडली में सतगुरु कबीर, सतगुरु पीपा, संत साईं दास तथा अन्य शिष्य-जीवन दास, गुरमुख दास, अनमोल राय आदि सम्मिलित थे। गुरु जी ने यहाँ कुछ दिन विश्राम किया और संगतों को 'मधुप मखीरे' का उपदेश दिया।

ग्राम चक्क हकीम के समीप, जी.टी. रोड के उत्तर दिशा में स्थित यह दरबार महात्मा हीरा दास जी द्वारा स्थापित किया गया है, जो गुरु रविदास महाराज जी की प्रथम पंजाब यात्रा की स्मृति को संजोए हुए है। इसकी स्थापना संवत 1945 विक्रमी में की गई थी। इस मंदिर में '**श्री रविदास दीप ग्रंथ**' का प्रकाश है। इस अस्थान की सेवा संभाल Sant Parshotam Dass Ji कर रहे हैं। उनका मोबाइल नं. +91-83600-88787 है। इस मंदिर के पश्चिम दिशा में, जी.टी. रोड पर, गुरु रविदास महाराज जी की यात्रा को मूर्त रूप देने वाला '**संत शिरोमणि गुरु रविदास मंदिर**' निर्माणाधीन है। इस विशाल मंदिर का निर्माण गुरु रविदास महाराज जी की समस्त संगतों के सहयोग से किया जा रहा है। यहाँ श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का प्रकाश है। देश-विदेश से श्रद्धालु इस मंदिर के दर्शन हेतु आते हैं। यह स्थल संगतों की आस्था का प्रमुख केंद्र बन चुका है।

गुरु रविदास महाराज जी की ग्राम डंडे की यात्रा - 2

गुरु रविदास महाराज जी के आगमन से आशा की नई किरण जाग उठी। लंबे समय बाद पंजाब की धरती पुनः आलोकित हुई। गुरु रविदास महाराज जी अपनी संत मंडली सहित विभिन्न स्थानों पर पड़ाव करते हुए जालंधर, जंडियाला, बंडाला होते हुए सन् 1481 के अंत में अटारी बॉर्डर के समीप ग्राम डंडा पहुँचे। यह गाँव अमृतसर से लगभग 26 किलोमीटर दूर स्थित है। गुरु जी के आगमन के समय अमृतसर नगर अस्तित्व में नहीं था; बहुत समय बाद इस नगर को गुरु रामदास जी ने बसाया। वर्तमान जी.टी. रोड पर स्थित गोल्डन गेट को पार कर, खालसा कॉलेज अमृतसर के सामने से होते हुए ग्राम डंडा पहुँचा जा सकता है। ग्राम डंडा के पश्चिम दिशा में घुमंतू संत मंडलियों के लिए एक रमणीय पड़ाव हुआ करता था।

गुरु जी ने यहाँ कुछ दिन विश्राम किया और संगतों को हक्क, सच्च और सतनाम का उपदेश दिया। उनके द्वारा दिखाए गए मार्ग को आगे संत मणि राम जी ने बढ़ाया। संत मणि राम जी की स्मृति में यहाँ निर्मित मंदिर आज भी उनकी साधना और सेवा की कथा कहता है। उनके पश्चात संत

मान दास, संत हरि दास, संत तोता दास, संत चुप्प दास और संत ज्ञान दास आदि गुरु रविदास महाराज जी के मिशन के ध्वजवाहक बने।

इस ऐतिहासिक स्थल पर गुरु जी की यात्रा को जीवंत रूप देने के लिए 'गुरु रविदास जन्म उत्सव कमेटी, दिल्ली' द्वारा स्थानीय संगतों के सहयोग से एक भव्य मंदिर की रूप-रेखा तैयार की गई है, जो वर्तमान में निर्माणाधीन है। अब इस पवित्र स्थल की सेवा-संभाल श्री गुरु रविदास नौजवान सेवक सभा, ग्राम डंडा अमृतसर द्वारा की जा रही है। संपर्क नं. +919592186561

दूसरी पंजाब यात्रा

गुरु रविदास महाराज जी की खुरालगढ़ साहिब में फेरी - 3

गुरु रविदास मंदिर श्री खुरालगढ़ साहिब - ज़िला होशियारपुर के जनौड़ी गाँव से मंज़िल-दर-मंज़िल चलते हुए गुरु रविदास महाराज जी सन् 1499 ईस्वी में श्री खुरालगढ़ साहिब पहुँचते हैं। यह पावन स्थान गढ़शंकर, ज़िला होशियारपुर से लगभग 35 किलोमीटर की दूरी पर, रमणीय पहाड़ियों की गोद में स्थित है। श्री खुरालगढ़ साहिब के उत्तर-पूर्व में हिमाचल प्रदेश के मनोहारी पहाड़ सुंदर दृश्य प्रस्तुत करते हैं। गुरु जी ने अपनी संत मंडली के साथ इस पावन स्थान पर कुछ दिन विश्राम किया। यहाँ अपने दिव्य प्रवचनों से उन्होंने जंगल में भी मंगल कर दिया।

गुरु रविदास महाराज जी के आगमन को साकार करता हुआ यहाँ एक विशाल गुरुद्वारा साहिब सुशोभित है। गुरु रविदास जी की दैवी शक्ति से खुरास (चक्की) के अपने आप चलने की कथा भी इस स्थान से जुड़ी हुई है। आने वाली संगतों के लिए यहाँ रात्रि-विश्राम तथा लंगर की विशेष व्यवस्था है। वर्तमान समय में इस स्थान की सेवा-संभाल भाई केवल सिंह जी के नेतृत्व में चल रही है। उनका मोबाइल नंबर +91 94175 40489 है।

गुरु रविदास यादगार मीनरा-ए-बेग़मपुरा - गुरु रविदास महाराज जी के दर्शन और दर्शन-दर्शन को आगे बढ़ाने के लिए पंजाब सरकार द्वारा इस गुरुद्वारा साहिब से लगभग 200 मीटर की दूरी पर 'मीनार-ए-बेग़मपुरा' श्री गुरु रविदास जी की स्मारक निर्माणाधीन है। गुरु जी के जीवन की झलकियाँ दर्शाने वाला यह एक अद्भुत स्मारक होगा।

श्री चरण छोह गंगा अमृत कुंड - श्री खुरालगढ़ साहिब से लगभग तीन किलोमीटर की दूरी पर श्री गुरु रविदास ऐतिहासिक धर्म स्थान श्री चरण छोह गंगा, अमृत कुंड, सचखंड स्थित है। यह स्थान ऊँची पहाड़ी से काफी नीचे सुशोभित है। यहाँ विशाल हाल में गुरु रविदास महाराज जी की सुंदर मूर्ति विराजमान है। इस हाल में गुरु जी की वाणी और दर्शन-दर्शन पर प्रतिदिन कथा-विचार होते हैं। यहाँ लंगर और निवास की विशेष व्यवस्था है। यहीं गुरु जी द्वारा लोगों की सुविधा के लिए जल का स्रोत प्रकट किया गया बताया जाता है। इस स्रोत को भव्य सरोवर का रूप दे दिया गया है, जिसमें पवित्र जल का स्रोत आज भी प्रवाहित हो रहा है। इस स्थान की सेवा-संभाल ऑल इंडिया आदि धर्म मिशन द्वारा की जाती है। वर्तमान समय में इस स्थान की सेवा-संभाल संत सुरिंदर दास जी के नेतृत्व में चल रही है, जिनका मोबाइल नंबर +919417057352 है। श्री गुरु रविदास महाराज जी के जीवन-दर्शन से संगतों को जोड़ने में यह स्थान महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

गुरु रविदास जी का बेग़मपुरा : भय, दु:ख और भेदभाव से रहित समाज के स्वप्न की संकल्पना

प्रेम कुमार चुम्बर, संपादक : देश दूआबा (पंजाबी समाचार पत्र)
Ambedkar Times (English Newspaper) www.ambedkartimes.com, Mobile: 001-916-947-8920

श्री गुरु रविदास जी महाराज का 649वाँ आगमन पर्व आज पूरे विश्व में श्रद्धा और सम्मान के साथ मनाया जा रहा है। गुरु रविदास जी उत्तर भारत के मध्यकालीन भक्ति और क्रांतिकारी आंदोलन के एक महान शिरोमणि संत, गुरु, सतगुरु तथा मार्गदर्शक थे। वे भारत की उस जाति से संबंधित थे, जिसे समाज में निम्न कही जाने वाली चमार जाति के नाम से जाना जाता है। तथाकथित उच्च जातियाँ, जो स्वयं को 'स्वर्ण' कहती थीं, इस जाति तथा इससे जुड़े व्यक्तियों के स्पर्श मात्र से ही अपने आपको अपवित्र मानती थीं। गुरु रविदास जी ने छुआछूत की अन्यायपूर्ण व्यवस्था के विरुद्ध सीधे और दृढ़तापूर्वक प्रहार किया। उन्होंने परमात्मा तक पहुँचने के लिए ब्राह्मणवादी मध्यस्थता की परंपरा को पूर्णत: अस्वीकार कर दिया। गुरु जी का स्पष्ट मत था कि प्रभु तक पहुँचने के लिए किसी मनुष्य को न तो अपनी जाति छिपाने की आवश्यकता है और न ही अपने तथाकथित निम्न कहे जाने वाले पेशे को त्यागने की। उन्होंने ब्राह्मणवादी सामाजिक व्यवस्था की पदानुक्रम से उत्पन्न बाधाओं को ध्वस्त कर 'बेगमपुरा'–अर्थात भय, दु:ख और अत्याचार से मुक्त, समानता–आधारित राज्य–की संकल्पना प्रस्तुत कर विश्व के महान मार्गदर्शक का स्थान प्राप्त किया। गुरु रविदास जी ने ईमानदार श्रम को सशक्तिकरण का स्रोत बताते हुए श्रम के सम्मान को उच्च स्थान प्रदान किया। उन्होंने दान, कृपा अथवा चमत्कारी तरीकों से प्राप्त संपत्ति पर निर्भर रहने की धारणा को स्पष्ट रूप से अस्वीकार किया।

एक औपचारिक रूप से आयोजित शास्त्रार्थ में काशी के प्रसिद्ध पंडितों को पराजित कर गुरु रविदास जी ने यह सिद्ध कर दिया कि योग्यता और ज्ञान किसी तथाकथित उच्च जाति की बपौती नहीं हैं। प्रत्येक मनुष्य परमात्मा का स्मरण करने में सक्षम है। हिंदू समाज की चार–वर्णीय व्यवस्था एक बड़ा भ्रम है, जिसके आधार पर भारतीय समाज के एक बड़े वर्ग को तथाकथित ब्राह्मणों द्वारा गढ़े गए 'शुद्धता–अशुद्धता' के सिद्धांत के नाम पर मानसिक और शारीरिक दासता में जकड़ कर रखा गया। इसी अन्यायपूर्ण और धर्म के नाम पर थोपे गए सामाजिक विभाजन की व्यवस्था के विरुद्ध गुरु रविदास जी ने ऐसे समाज और राज्य की कल्पना की, जहाँ छुआछूत, अत्याचार और भेदभाव के लिए कोई स्थान न हो।

सामाजिक परिवर्तन को व्यवहारिक रूप देने के लिए गुरु रविदास जी ने मानव जीवन के मूल मूल्यों–श्रम, करुणा, सदाचार, नैतिकता तथा शराब जैसी नशीली वस्तुओं से दूर रहने–पर विशेष बल दिया। उन्होंने मनुष्य को हर प्रकार के दुष्कर्मों से बचते हुए सत्य, ईमानदारी और सादगीपूर्ण जीवन जीने की प्रेरणा दी। इसके साथ ही उन्होंने निराकार परमात्मा के स्मरण की तात्कालिक और अत्यावश्यक ज़रूरत को रेखांकित किया, जिसे वे विभिन्न नामों से संबोधित करते थे, किंतु जिसका स्वरूप एक ही था।

गुरु रविदास जी ने अपने समय की ब्राह्मणवादी, कर्मकांडी और मानवता–विरोधी सामाजिक

व्यवस्था के विरुद्ध निर्भय होकर आवाज़ उठाई। उन्होंने सदियों से पीड़ित और दबे–कुचले वर्गों को संगठित कर उनमें आत्म–गौरव, चेतना और अधिकारों की भावना का संचार किया। सत्य के पक्ष में निर्भय और निर्वैर होकर दृढ़ता से खड़े रहने का ही परिणाम था कि न केवल भारत में, बल्कि सम्पूर्ण विश्व में 'बेगमपुरा'–अर्थात भय, दु:ख, छुआछूत तथा रंग–नस्ल और देश–प्रदेश की सीमाओं से ऊपर उठकर, भेदभाव–मुक्त सामुदायिक भाईचारे पर आधारित समाज की स्थापना का ध्वज बुलंद हुआ। गुरु रविदास जी द्वारा प्रस्तुत बेगमपुरा की संकल्पना साझेदारी, समानता और स्वतंत्रता पर आधारित है। यह संकल्पना केवल एक काल्पनिक राज्य नहीं, बल्कि मानवता के लिए एक आचरणात्मक मार्गदर्शन है, जो आज भी विश्व भर में सामाजिक न्याय, मानवाधिकारों और समानता के संघर्ष के लिए एक प्रकाश–स्तंभ बनकर मार्ग दिखा रहा है।

तन सुगंध ढूंढे प्रदेश

चरनजीत सिंह बिनपालके

ज्ञान की प्राप्ति के लिए मनुष्य को गुरु की आवश्यकता होती है। 'गुरु' शब्द संस्कृत भाषा से आया है, जिसका अर्थ है–अज्ञान के अंधकार को दूर करने वाला। भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु ज्ञान प्राप्त करने के लिए हमें अनेक मार्गदर्शकों, उस्तादों, अध्यापकों तथा आज के दौर में कंप्यूटर, मोबाइल और इंटरनेट की आवश्यकता पड़ती है। परंतु आध्यात्मिक, धार्मिक और सामाजिक ज्ञान के लिए गुरु का चयन करना एक अत्यंत जटिल विषय बना दिया गया है। वास्तव में यह विषय जटिल था ही नहीं, बल्कि इसे जानबूझकर जटिल बनाया गया है।

यदि हम श्री गुरु रविदास जी के बसंत राग में उच्चारित पावन शब्द '**तुझहि सुझंता कछू नाहि**' के केवल एक ही पद को समझ लें, तो इस भ्रम–जाल से मुक्त हो सकते हैं। किंतु इस ज्ञान की प्राप्ति के लिए हम किस प्रकार उलझे हुए हैं–पहले इसी पर विचार करते है। आज के अत्याधुनिक युग में पूरा संसार एक गाँव की भांति हो गया है। संसार के किसी भी कोने में घटित घटना का हमें ऐसा अनुभव होता है मानो वह हमारे पड़ोस में ही हुई हो। फिर भी विज्ञान के इस अथाह प्रकाश में मनुष्य इतना अधिक अंधविश्वासी हो गया है कि उसकी कोई सीमा नहीं रही। अशिक्षित व्यक्ति से तो यह अपेक्षित है, किंतु पढ़ा–लिखा व्यक्ति भी उससे कहीं आगे बढ़कर अंधविश्वास में लिप्त दिखाई देता है। ईश्वर की प्राप्ति, उसके दर्शन, जीवन को सुखी बनाने, मन्नतें मांगने या उन्हें उतारने के लिए आज भी लोग कठिन तीर्थ यात्राएँ कर रहे हैं। ज्योतिषियों, तांत्रिकों और पाखंडियों के चंगुल में लोग आज भी इस प्रकार फँस जाते हैं मानो वे पाषाण युग में जी रहे हों।

ये अंधविश्वासी लोग कौन हैं? ये वही लोग हैं जो परमात्मा में ज्ञान–विहीन श्रद्धा और विश्वास रखते हैं। जो प्रत्येक धार्मिक स्थल को उसका निवास तो मानते हैं, परंतु शायद प्रत्येक जीव में उसके वास को स्वीकार नहीं करते होंगे। जो धर्म की वास्तविकता को निकट से पढ़ते और समझते नहीं। जिनके मन में धर्म के प्रति भय और भ्रम होता है। जो रातों–रात अमीर बनने की लालसा रखते हैं। जो बिना परिश्रम किए सफलता और इच्छापूर्ति चाहते हैं।

जो लोग धार्मिक जीवन जीते हैं, धार्मिक कार्य करते हैं या धार्मिक नेतृत्व करते हैं–उनमें से कुछ को

वास्तविक धार्मिक ज्ञान प्राप्त हो जाता है और वे आडंबर, पाखंड तथा लोक-प्रदर्शन से मुक्त हो जाते हैं। किंतु जो लोग धर्म को अपने मन की इच्छा के अनुसार अपनाते हैं, वे केवल अपने मन की तृप्ति ही करते हैं। कुछ लोग धर्म में रहते हुए भी उसे समझ नहीं पाते और वही कर्मकांड करते रहते हैं जो सामान्य जन करते हैं। कुछ धार्मिक कार्यकर्ताओं की श्रद्धा नकारात्मक हो जाती है, परंतु वे परंपरा निभाने, लोक-प्रदर्शन करने या केवल अपनी 'ड्यूटी' समझकर इन आडंबरों को जारी रखते हैं। क्योंकि यदि धार्मिक नेता और प्रचारक ही यह कर्मकांड न करें, तो सामान्य जनता कैसे करेगी?

हमें और हमारे बच्चों को अपने गुरुजनों और मार्गदर्शकों के ऐतिहासिक स्थलों के दर्शन अवश्य करने चाहिए–सरल तरीकों से और अपनी सामर्थ्य के अनुसार। किंतु हम देखते हैं कि कुछ लोग उन धार्मिक स्थलों की ओर सैकड़ों मील की पदयात्राएँ करते हैं, जिनका न तो उनके जीवन से और न ही उनके पूर्वजों के इतिहास से कोई संबंध होता है। वहां घंटों कतारों में खड़े रहते हैं–भीषण गर्मी, ठंड, धक्का-मुक्की और तनावपूर्ण वातावरण होता है।

सोचने की बात है कि क्या हमारे देश के प्रसिद्ध, धनवान, अधिकारी या शिक्षित लोग भी इसी प्रकार कई घंटों तक कतारों में खड़े होकर दर्शन करते हैं? नहीं। इसका यह अर्थ नहीं कि उन्हें ईश्वर का ज्ञान हो गया है, बल्कि वे यह भली-भांति जानते हैं कि ऐसे धार्मिक आडंबरों का कोई वास्तविक लाभ नहीं। किंतु समाज को उलझाए रखने के लिए कुछ लोग इन आडंबरों पर धन खर्च करते हैं। यहाँ प्रश्न उठता है कि कठन हालात में धार्मिक मुखियों व स्थानों के दर्शन करने का हमारा उद्देश्य क्या है? क्या यह उद्देश्य सार्थक है? वास्तव में, जब तक हम परमात्मा, गुरु, पीर या पैगंबर की विचारधारा और ज्ञान को पढ़ते, सुनते, समझते और जीवन में नहीं अपनाते, तब तक केवल उनके दर्शन का कोई लाभ नहीं। गुरबाणी का स्पष्ट आदेश है–

'सतिगुर नो सभु को वेखदा जेता जगतु संसारु।।
डिठै मुकति न होवई जिचरु सबदि न करे विचारु।।'

अर्थात् संपूर्ण संसार सतिगुरु को देखता है, परंतु केवल देखने से मुक्ति नहीं मिलती, जब तक उसके शब्द (ज्ञान) पर विचार न किया जाए।

कुछ लोगों की श्रद्धा किसी विशेष धार्मिक स्थल या धार्मिक नेता से जुड़ी होती है, जिसे वे सर्वोच्च मान लेते हैं। यह जुड़ाव पीढ़ी दर पीढ़ी चलता रहता है और जिस से उनकी मानसिकता एक सीमित दायरे में बंध जाती है। गुरु रविदास जी के शब्दों में– **'कूपु भरिओ जैसे दादिरा, कछु देसु बिदेसु न बूझ।'** अर्थात् कुएँ का मेंढक, जिसे बाहर की दुनिया का ज्ञान नहीं। ऐसी मानसिकता से व्यक्ति की तृप्ति भले हो जाए, परंतु उसकी पीढ़ियाँ और समाज गुलामी की अवस्था में जीने का आदी बन जाता है।

आज ज्ञान चारों ओर उपलब्ध है। ज्ञान प्राप्ति के लिए कठिन यात्राएँ, कर्मकांड और आडंबरों में समय व धन नष्ट करने की आवश्यकता नहीं। हम अपने गुरुजनों की वाणी को सही रूप में पढ़कर और समझकर यह ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। आध्यात्मिक और धार्मिक ज्ञान के लिए कहीं दूर जाने की आवश्यकता नहीं।

तो फिर प्रश्न है–ज्ञान या ईश्वर-प्राप्ति का स्रोत कहाँ है? आएं इस चर्चा का समाधान गुरु रविदास जी के पावन वचनों से करते हैं। वे गुरु जी कस्तूरी मृग का उदाहरण देकर समझाते हैं–

'जैसे कुरंक नहीं पायो भेदु। तन सुगंध ढूंढे प्रदेश।
अप तन का जो करे बीचार। तिस नाही जमकंकरु करे खुआर।'

गुरु जी बताते हैं कि मृग जिस सुगंध की खोज में जंगल-जंगल भटकता है, वह सुगंध वास्तव में उसी की नाभि से निकलती है। किंतु अज्ञानवश वह उसे बाहर खोजता रहता है। उसी प्रकार मनुष्य भी ईश्वर या ज्ञान की खोज में भटक रहा है, जबकि उसका स्रोत उसके अपने हृदय में ही है। जो मनुष्य इस सत्य को समझ लेता है और गुरु के ज्ञान को अपना लेता है, वही अपने जीवन को व्यर्थ होने से बचा लेता है। गुरु रविदास जी की बाणी और विचारधारा अपनाकर अपने जीवन को सार्थिक करें।

ध्यान देने योग्य महत्वपूर्ण तथ्य

* श्री गुरु रविदास जी के गुरु केवल पारब्रह्म परमात्मा ही थे। कोई भी देहधारी धार्मिक नेता, कोई मूर्ति, कोई देवता, भगवान, ठाकुर अथवा कोई अन्य व्यक्ति गुरु रविदास जी के गुरु नहीं था।

* प्रत्येक कौम का अपना एक निश्चित रंग होता है, जिसके माध्यम से उसकी पहचान बनती है। गुरु रविदास नामलेवा समाज का रंग मजीठ है। इसलिए इस समाज के धार्मिक अवसरों–जैसे निशान साहिब का चोला, सिरोपाव, पटके, दुपट्टे–तथा सामाजिक संस्थाओं की गतिविधियों के समय, और सामाजिक रीति-रिवाजों–जैसे विवाह, जन्म-मरण एवं अन्य संस्कारों–के निर्वहन के दौरान प्रयुक्त किया जाने वाला रंग मजीठ ही होता है।

मजीठ का रंग स्थायी और अटल होता है। गुरु रविदास जी ने अपनी वाणी में इसकी तुलना परमात्मा के रंग से की है। मजीठ का रंग लाल-काला, लाखी अथवा गहरा मैरून होता है।

* श्री गुरु रविदास जी की वाणी एवं विचारधारा, जीवन-इतिहास, अन्य आदिवासी महापुरुषों की वाणी एवं विचारधारा, बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर जी तथा आदिवासी मार्गदर्शकों के विषय में हिंदी, पंजाबी, अंग्रेज़ी एवं अन्य भाषाओं में जानकारी प्राप्त करने के लिए हमारी वेबसाइट www.begumpuramission.com अवश्य देखें।

* श्री गुरु रविदास जी का 650वाँ प्रकाश पर्व अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह पावन पर्व 1 फरवरी 2026 से 20 फ़रवरी 2027 तक पूरे एक वर्ष श्रद्धा एवं सम्मान के साथ मनाया जा रहा है। पूरा वर्ष यह प्रकाश पर्व हमें गुरु रविदास जी की वाणी, विचारधारा और जीवन-इतिहास के अनुरूप ही मनाना चाहिए।

यह जानने के लिए कि यह 650वाँ प्रकाश पर्व किस प्रकार मनाया जाए, वेबसाइट www.begumpuramission.com पर उपलब्ध "650 years" पृष्ठ देखें।

इस वेबसाइट पर श्री गुरु रविदास जी से संबंधित अनेक महत्वपूर्ण पुस्तकें उपलब्ध हैं।

* श्री गुरु रविदास जी की वाणी एवं उसकी व्याख्या सहित गुटका साहिब नि:शुल्क प्राप्त करने के लिए संपर्क करें :

रूप लाल रूप, मोबाइल : +91 94652 29722